अथ तृतीयोऽध्यायः

कर्मयोग

(भगवत्परायण कर्म)

अर्जुन उवाच।

28.2

ज्यायसी चेत्कर्मणस्ते मता बुद्धिर्जनार्दन।
तत्किं कर्मणि घोरे मां नियोजयसि केशव।।१।।

अर्जुनः उवाच=अर्जुन ने कहा; **ज्यायसी**=उत्तम; **चेत्**=यदि; **कर्मणः**=सकाम कर्म से; **ते**=आपका; **मता**=मत; **बुद्धिः**=बुद्धि; **जनार्दन**=हे कृष्ण; **तत्**=फिर; **किम्**=क्यों; **कर्मणि**=कर्म में; **घोरे**=जघन्य; **माम्**=मुझे; **नियोजयसि**=लगाते हैं; **केशव**=हे कृष्ण।

अनुवाद

अर्जुन ने कहा, हे जनार्दन! यदि आप सकाम कर्म की अपेक्षा बुद्धियोग को श्रेष्ठ समझते हैं, तो फिर हे केशव! मुझे इस घोर युद्ध में बलपूर्वक क्यों लगा रहे हैं?।।१।।

तात्पर्य

अपने अन्तरंग सखा अर्जुन को शोक-सागर से मुक्त करने के उद्देश्य से भगवान् श्रीकृष्ण ने द्वितीय अध्याय में जीव के स्वरूप का विशद प्रतिपादन किया है। इसी सन्दर्भ में 'बुद्धियोग' अथवा कृष्णभावनामृत को स्वरूप-साक्षात्कार का मार्ग कहा